Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

डॉ. एम. एन. रॉय और नव मानववाद: एक अध्ययन

Dr. P. K. Chaturvedi*

Professor, Political Science, Government Graduate College, Hatpipliya, District – Dewas, MP

सार - ***भारत में समाजवादी चिंतन परम्परा में डॉ. एन एस रॉय का नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है। उन्होनें समाजवाद की सैद्धान्तिक व्याख्या की तथा उसके प्रचार प्रसार के लिये अथक प्रयास भी किये। उन्होनें नव मानववाद के नवीन एवं मौलिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उन्होंने समाज में नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापन का आग्रह किया तथा साम्यवाद में अधिनायकवादी प्रकृतियों के समावेश का विरोध किया। उनके द्वारा प्रतिपादित नवमानववाद का राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में एक अनुपम योगदान माना जाता है।***

---------------------------------X---------------------------------

नवमानववाद

मानववाद एक प्राचीन विचारधारा है जिसके अनुसार समस्त कार्यो का केन्द्र बिन्दु मनुष्य ही है। यह ईश्वर की सत्ता पर मानव की सत्ता को स्थापित करने का सर्मथन करता है। प्राचीन भारत में चार्वाक एवं बौद्य दर्शन तथा आधुनिक युग में यर्थाथवाद, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद आदि रूपो में मानववाद प्रकट हुआ है। नवमानववाद का आधार भौतिकवाद है तथा उसकी पद्धति यान्त्रिक है।

नवमानववाद मानव जीवन में धर्म की प्रधानता को स्वीकार नहीं करता है। यह किसी भी रहस्यमय को स्वीकार नहीं करता है। यह मनुष्य को सर्वोच्च मानता है तथा समाज के द्वारा स्वयं को व्यक्ति के उपर पाये जाने का विरोध करता है।

नवमानववाद की मूल मान्यताए इस प्रकार हैः

1. मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता:- नवमानववाद के अनुसार मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। उसमें संसार को दिशा देने की क्षमता है। संसार वर्तमान में, जितना सुन्दर है उसकी तुलना में वह उसें और भी अधिक सुन्दर तथा श्रेष्ठ बना सकता है।

2. मनुष्य स्वभाव सें विवेकपूर्ण और नैतिक है:- नव मानववाद के अनुसार मनुष्य एक विवेक शील प्राणी है। वह स्वभाव सें ही विवेकपूर्ण है साथ ही उसमें नैतिकता की भावना भी है।

3. उन्मुक्त एवं न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था:- नवमानववाद एक उन्मुक्त एवं न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का सर्मथन करता है। मनुष्य के विवेक में आस्था के कारण यह उन्मुक्त व्यवस्था का सर्मथन करता है तथा नैतिकता में आस्था के कारण यह न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का सर्मथन करता है।

4. भौतिक वाद में आस्था:- नवमानववाद भौतिक वाद में पूर्ण आस्था रखता है। यह विवेक और लौकिक आस्था पर आधारित है। यह आध्यात्मिक आत्मानुभुति में विष्वास नहीं करता है। यह आध्यात्म वाद को अंधविष्वास मानता है।

5. तर्क एवं वैज्ञानिक ताकत का सर्मथन:- नव मानववाद प्रत्येक बात को तर्क और विवेक की कसौटी पर कसने का सर्मथन करता है। डॉ. एम. एन. रॉ के अनुसार- ‘‘व्यक्ति के जीवन और उसके व्यक्तित्व में तर्क और विवेक सार्वभौमिक समन्वय की प्रतिध्वनि है।’’ उनके अनुसार जब तक प्रत्येक बात को तर्क और विवेक की कसौटी पर नहीं कसा जाएगा तब तक चिन्तन में वैज्ञानिकता नहीं आ सकती है।

6. नैतिकता एक आन्तरिक शक्ति:- डॉ. एम. एन. रॉय ने जिस नैतिकता का प्रतिपादन किया है, वह कोई अतिमानवीय तथा बाह्य वस्तु नहीं है। वह एक आन्तरिक शक्ति है जिसका पालन मनुष्य को समाजकल्याण की भावना सें करना चाहियें। उनके

www.ignited.in

अनुसार सच्ची नैतिकता का पालन ईश्वरीय अथवा प्राकृतिक भय सें नहीं किया जा सकता है बल्कि इसके मूल में सामाजिकता तथा कल्याण की भावना विद्यामान होती है। नैतिकता के अभाव में मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती है

7. नैतिकता के आधार पर राजनीति की वकालत:- नवमानववाद के अनुसार नैतिकता एवं बुद्धिवाद के अभाव में एक मनुष्य को मनुष्य नहीं कहा जा सकता है। यह नैतिक आधारों पर समाज को संगठित करने का समर्थन करता है साथ ही नैतिकता के आधार पर राजनीति की वकालत की करता है।

8. स्वतन्त्रता का समर्थन:- नवमानाववाद के अनुसार समाज का आधार जितना बुद्धिवादी एवं नैतिकतावादी होगा, व्यक्ति के विकास पर लगे प्रतिबन्ध उतने ही अधिक शिथिल हो जाएंगे तथा उतनी ही अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी। डॉ. एम. एन. रॉय के अनुसार हमें एक स्पष्ट और बुद्धिवादी दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए ताकि अपनी समस्याओं का समुचित निराकरण किया जा सके तथा एक स्वतंत्र और उन्मुक्त वातावरण में मानव सभ्यता का विकास हो सकें।

9. 'व्यक्ति', समाज का मूल आदर्श:- डॉ. एम. एन. रॉय के अनुसार व्यक्ति ही समाज का मूल आदर्श है। व्यक्ति प्रधान है तथा समाज व्यक्ति की सृष्टि है। व्यक्तियों के द्वारा ही अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समाज को बनाया गया है। समस्त सामाजिक समस्याओं का निर्धारण इस उद्देश्य सें किया जाना चाहिए कि उनसें व्यक्ति की स्वतन्त्रता को अधिक सें अधिक सम्बल मिले। राज्य को भी व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करने वाला कोई कार्य नहीं करना चाहिए।

10. मानववाद, व्यक्तिवाद और विवेकवाद:- डॉ. एम. एन. रॉय के अनुसार स्वतंत्रता के तीन आधार स्तम्भ मानववाद, व्यक्तिवाद और विवेकवाद है। मानव एक विवेकशील प्राणी है अतः वह स्वतंत्रता की कामना करता है।

11. विश्वबन्धुत्व:- नवमानववाद राष्ट्रवाद को संकीर्ण तथा जातीय विद्वेश पर आधारित मानता है। यह राष्ट्रवाद की संकीर्ण सीमाओं सें उपर उठकर विश्वबन्धुत्व में विश्वास करता है। डॉ. एम. एन. रॉय ने विश्वसंघ का सर्मथन किया है। उनके अनुसार स्वतंत्र व्यक्तियों का विश्व राज्य राष्ट्रीय सीमाओं से परिबद्ध नहीं होगा।

12. साध्य तथा साधन की नैतिकता:- डॉ. एम. एन. रॉय ने साध्य तथा साधन की नैतिकता के औचित्य पर बल दिया है। उन्होने दोनों का समन्वय करने का सर्मथन किया है।

13. मौलिक लोकतंत्र:- डॉ. एम. एन. रॉय के अनुसार सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए उसे दल रहित बनाया जाना आवश्यक है। सच्चे लोकतंत्र में सार्वजनिक मामलों में जन साधारण को अधिकाधिक भाग लेना चाहिये। डॉ. एम. एन. रॉय ने इस प्रकार के लोकतंत्र को संगठित कहा है। एसे लाकतंत्र में शक्ति जनता की स्थानीय समितियों के हाथें में होगी। लोकतंत्र में कुछ समुहो को संगठित कर लिया जाना चाहियें। इस समुहों के द्वारा जनसाधारण को इस प्रकार शिक्षित किया जाना चाहिये कि उनके स्वयं सोच विचार करने तथा निर्णय करने की शक्ति का विकास हो सकें। इस प्रकार की शिक्षा के प्रसार से एक एसे नैतिक वातावरण का विकास होगा जिसमें लोग स्वतः प्रेरणा से अपनी जन समितियों का निर्माण करेंगे। यें समितियाँ स्थानीय विषयों के प्रबन्ध के दायित्व का भार उठाने में समर्थ हो सकेगी। इन समितियों द्वारा उच्चतर स्तर पर समितियों का निर्माण किया जाएगा तथा यें उन पर आवश्यक अंकुश भी रख सकेंगी। इस प्रकार की व्यवस्था में सच्चे राजनीतिक विकेन्द्रीकरण का उदय होगा। एसी स्थिति में राज्य व्यक्ति और समाज के सम्पूर्ण जीवन पर छाया नहीं रहेगा बल्कि उसका मुख्य कार्य राज्य के सामाजिक जीवन में सामांजस्य स्थापित करना होगा। आर्थिक क्षेत्र में भी नियोजित अर्थव्यवस्था का मार्ग अपनाया जाना चाहिये। उत्पादन सहकारिता पर आधारित होना चाहिये संगठित लांकतंत्र में राजनीतिक और आर्थिक दोनो ही क्षेत्रो में विकेन्द्रीकरण होना चाहिये।

डॉ. एम. एन. रॉय ने आर्थिक शोषण के सभी रूपो का विरोध किया था। उन्होने समाजवादी एवं पूंजीवादी नियोजन पद्धति को अमान्य करते हुए आर्थिक समृद्धि के लिए औद्योगीकरण को आवश्यक माना। उन्होने नये नये उद्यौगो की स्थापना की सिफारिश की ताकि अधिक सें अधिक व्यक्तियों को

www.ignited.in

रोजगार मिल सके। उन्होनें सहकारिता पर आधारित उद्यौग तथा कृषि का समर्थन किया। वे व्यक्तिगत सम्पत्ति के विरूद्ध नहीं थें। उन्होनें राष्ट्रीयकरण का समर्थन नहीं किया था। वे निजी उद्योगो में हस्तक्षेप करने की नीति के पक्ष में भी नहीं थें।

14. राष्ट्रवाद सम्बन्धी विचारः- डॉ. एम. एन. रॉय राष्ट्रवाद को प्रतिक्रियावादी प्रकृति का बताते हुए इससे बचने की नीति का समर्थन करते थे। उनका विचार था कि राष्ट्रवाद भावुकता पर आधारित है अतः यह किसी भी राजनीतिक चिन्तन का आधार नहीं बन सकता है। उन्होनें राष्ट्रवाद के सिद्धान्त को निरर्थक माना तथा उसें पूजीवादी शोषण एवं औपनिवेशक विस्तारवाद का प्रतीक माना। वे राष्ट्रवाद को फासीवाद का प्रेरक मानते थें। फासीवाद को वे मानवीय अस्तित्व को नष्ट करने वाली विचारधारा मानते थें। भारतीय राष्ट्रीयवाद के भी वे कट्टर आलोचक थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को उन्होने एक फासिस्ट संगठन तक कह डाला था।

निष्कर्ष

भारतीय राजनीतिक चिन्तन के इतिहास में एक व्याख्याकार तथा इतिहासकार के रूप में डॉ. एम. एन रॉय का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उनका नव मानववाद राजनीतिक दर्शन को एक अनुपम देन है। नव मानववाद जीवन में मुल्यों को प्रथम स्थान पर प्रतिष्ठित करता है। उनका धर्मविहीन नैतिकता का विचार भी आधुनिक समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसकी प्रतिष्ठा सें समाज में फैली हिंसा सें छुटकारा मिल सकता है।

डॉ. एम.एन. रॉय की आलोचना भी की जाती है। उन्होने राष्ट्रवाद को एक सडा-गला आदर्श बताया। उन्होनें गांधीवाद की आलोचना की तथा गांधीवादी जीवन प्रणाली को आदिम बताते हुए उसकी भत्र्सना की। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को फासीवाद संगठन बताते हुए उन्होनें ब्रिटिश शासन से भारत छोडो आंदोलन को कुचल देने की अपील की। इन विचारो के कारण डॉ. एम. एन. रॉय की गम्भीर आलोचना हुई है। उनके नव मानववाद को भी 18वीं शताब्दी के उदारवाद का नवीन रूप तथा अमरीकी मानववाद में जोडकर देखा गया किन्तु इन आलोचनाओं के बाद भी भारतीय राजनीतिक चिन्तन में एक अद्भुत व्याख्याकार तथा इतिहासकार के रूप में डॉ. एम.एन रॉय के योगदान को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि आधुनिक युग में व्यक्ति धर्म, राष्ट्र तथा समाज के अवांछित बन्धनों में स्वयं को बंधा हुआ अनुभव करता है तो इन अवांदित बन्धनों सें मुक्ति दिलाने के उद्देश्य सें डॉ. एम. एन. रॉय के दर्शन का असाधारण महत्व है।

सन्दर्भ

1. डॉ. पुरषोत्तम नागरः आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन
2. डॉ. वी. पी. वर्माः आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन
3. एम. एन. रॉयः द फ्युचर ऑफ़ इंडियन पॉलिटिक्स
4. एम. एन. रॉयः न्यू ह्यूमनिज्म
5. आर के अवस्थीः सांइटीफिक ह्यूमनिज्म सोशल एण्ड पॉलिटिकल आइडियाज ऑफ़ एम. एन. रॉय

Corresponding Author

Dr. P. K. Chaturvedi*

Professor, Political Science, Government Graduate College, Hatpipliya, District – Dewas, MP